पाठ - अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

\- निदा फ़ाज़ली

प्रत्येक 1, 2 अंक

① धरती के बारे में क्या-क्या प्रश्न उठते रहे हैं?

उ० धरती के बारे में असंख्य प्रश्न उठते रहे हैं; जैसे -

\- यह धरती अस्तित्व में कैसे आई?

\- धरती बनने से पहले क्या चीज थी?

\- धरती की यात्रा किस बिंदु से शुरू हुई?

② बढ़ती आबादी के क्या दुष्परिणाम हुए?

उ० बढ़ती आबादी ने समुद्र को पीछे धकेलना शुरू कर दिया और पेड़ों को रास्ते से हटा दिया। इससे प्रदूषण फैलता चला गया। इसी प्रदूषण के कारण पक्षी बस्तियों को छोड़कर दूर चले गए

③ बढ़ती आबादी का प्राकृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उ० - बढ़ती आबादी के कारण समुद्र तट पर ऊँचे-ऊँचे भवन बना दिए गए। जंगलों से पेड़ काट दिए गए। रास्तों से भी पेड़ काट दिए गए। परिणाम स्वरूप प्रकृति में ~~कौन से परिवर्तन~~ प्रदूषण फैला, पक्षी बस्तियों से विदा हो गए। गर्मी में अधिक गर्मी होने लगी, आँधियाँ तूफान, बाढ़ तथा नए-नए रोग फैलने लगे।

④ प्रदूषण के परिणामस्वरूप प्रकृति में कौन-से परिवर्तन हुए?

उ० - प्रदूषण के कारण पक्षियों का नगरों में रहना दूभर हो गया। वे बस्तियाँ छोड़कर भाग गए। वातावरण में अत्यधिक गर्मी, बेवक्त बरसातें, बाढ़, तूफान और नए-नए रोग पैदा होने लगे।

(5) बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे धकेलकर उसकी जमीन क्यों हथिया रहे हैं?
उ०- जनसंख्या बढ़ने के कारण रहने हेतु घर बनाने के लिए बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को धकेलकर उसकी जमीन हथिया रहे हैं। समुद्र के पाँव पसारने का क्षेत्र सीमित होता है।

(6) क्रोधित समुद्र ने अपना क्रोध किस प्रकार किया?
उ०- क्रोधित समुद्र ने एक रात अपनी लहरों पर चलते तीन बड़े जहाजों को वर्ली, बांद्रा व गेट वे-ऑफ इंडिया यानी तीनो को अलग-2 दिशाओं में फेंकदिया।

(7) वर्सोवा में अब क्या बदलाव आ गए हैं?
उ०→ वर्सोवा में जनसंख्या बढ़ी है। परिणामस्वरूप आस-पास के जंगल काटे गए। पेड़ काटने से पशु-पक्षियों के आशियाने उजड़ गए। इस प्रकार मनुष्य की बस्ती बसने से पशु-पक्षियों के स्वाभाविक घर छीन लिया।

(8) किस हिस्सेदारी में मानव ने दीवारें खड़ी कर दी हैं और कैसे?
उ०- प्रकृति के सभी जीवों की बराबरी की हिस्सेदारी है। यह तब से है, जब दुनिया अस्तित्व में आई है, परंतु मनुष्य ने अपनी बुद्धि से दीवारें खड़ी कर दी हैं।

(9) पूरा संसार अब कैसा हो गया है और क्यों?
उ०→ पहले सभी लोग आपस में मिल-जुलकर रहते थे, परंतु आज जीवन छोटे-2 डिब्बेनुमा घरों में सिमट गया है। बढ़ती आबादी के कारण लोग अब एक दूसरे से कटकर दूर हो गए हैं।

(10) 'छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों' कथन का क्या आशय है?

उ० - इस कथन का आशय है कि जीवन का छोटे-छोटे डिब्बेनुमा घरों में सिमट जाना। पहले लोग बड़े-बड़े घरों में संयुक्त परिवार के रूप में रहते थे, किंतु अब सब लोग व्यक्तिवादी भावना से प्रभावित हैं। इसलिए अब जीवन छोटे-छोटे डिब्बे जैसे घरों में सिमटने लगा है।

प्रत्येक - 2 से 3 अंक

(11) अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

उ० - अरब में लशकर को नूह के नाम से इसलिए याद किया जाता है क्योंकि वे सारी उम्र रोते रहे। उनके रोने का कारण एक जख्मी कुत्ता था, जिसे उन्होंने दुत्कार दिया था।

(12) लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्तों को तोड़ने से मना किया करती थी और क्यों?

उ० - लेखक की माँ सूरज ढलने के बाद पेड़ों से पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी। उनका कहना था कि इससे पेड़ रोते हैं, बद्दुआ देते हैं।

(13) लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोजा क्यों रखा?

उ०- लेखक की माँ कबूतर के एक अंडे को बिल्ली की पहुँच से दूर करने के लिए स्टूल पर चढ़कर सुरक्षित रखने लगीं, परंतु अंडा उनके हाथ से छूटकर गिर गया। इसके प्रायश्चित में उन्होंने पूरे दिन का रोजा रखा।

(14) लेखक ने ग्वालियर से मुंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(14) समय के साथ लेखक ने अनेक बदलाव महसूस किए। जहाँ पहले हरियाली थी, पशु-पक्षी उन्मुक्त विचरण करते थे, उन जंगलों को काटकर चौड़ी बहियाँ सड़कें और मानव बस्तियाँ बसा दी गईं। आज मनुष्य आत्मकेंद्रित हो गया है या भावनाएँ समाप्त हो गई हैं।

(15) 'डेरा डालने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उ०-> 'डेरा डालने' का आशय है - अस्थाई रूप से बसना। अकसर खानाबदोश जातियाँ डेरा डालकर रहती हैं क्योंकि उनके स्थायी घर नहीं होते।

(16) शेख अयाज के पिता अपने बाजू पर चींटा रेंगता देख भोजन छोड़कर क्यों उठ खड़े हुए?

उ० - शेख अयाज के पिता भोजन कर रहे थे तभी उन्होंने देखा कि एक काला चींटा उनकी बाजू पर रेंग रहा है। वे भोजन छोड़कर उठ खड़े हुए। माँ द्वारा यह पूछने पर कि क्या भोजन अच्छा नहीं लगा? वे बोले, यह बात नहीं है पर मैंने किसी घर वाले को बेघर कर दिया है। उसे उसके घर कुएँ पर छोड़ने जा रहा हूँ। इससे पता चलता है कि वे शीघ्र ही अपनी भूल का प्रायश्चित कर लेना चाहते थे।

लघु - 3 से 5 अंक

(1) लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उ० - कबूतर अपने बच्चों की रखवाली के लिए बार-बार लेखक के घर में चले आते थे जिससे लेखक का घर और पुस्तकालय गंदा होता था

और आवश्यक सामान टूट जाते थे। इस समस्या से परेशान होकर लेखक की पत्नी ने कबूतर को घर में आने से रोकने के लिए खिड़की में जाली लगवा दिया।

(18) ~~प्रश्न~~ "मिट्टी से मिट्टी मिले, खो के सभी निशान। किसमें कितना कौन है, कैसे हो पहचान।" आशय स्पष्ट करें?

उ० इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक यह कहना चाहता है कि सभी प्राणियों का निर्माण एक ही मिट्टी से हुआ है। इस शरीर में न जाने कौन-कौन सी मिट्टी मिली हुई है, इसका बोध किसी को नहीं होता। सभी मनुष्य समान हैं। उनमें भेद-भाव करना उचित नहीं है। पशु-पक्षियों को भी वही बनाता है जो मनुष्यों बनाता है। जब सभी प्राणियों में एक ही तत्व समाया हुआ तो उनमें भेदभाव उचित नहीं है। इसे पहचानने की कोशिश व्यर्थ है।

(19) "मुड़ो प्रकृति की ओर, बढ़ो मनुष्यता की ओर" प्रस्तुत पाठ के आधार पर इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उ० – यह कथन सर्वथा सत्य है। ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकृति पहले से थी मनुष्य बाद में आया। इस नाते प्रकृति हमारी मां और हम उसकी संतान हैं। धरती पर अन्य प्राणियों का भी उतना ही अधिकार है जितना मनुष्य का। लेकिन मानव ने बुद्धि के बल पर अपने और प्रकृति के बीच बड़ी-बड़ी दीवारें खड़ी कर दी हैं और अनावश्यक रूप से प्रकृति में हस्तक्षेप करने लगा है। प्रकृति की सहनशक्ति धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। बाढ़, भूकंप, प्रदूषण, तूफान, मौसम में बदलाव के रूप में प्रकृति भी अपना बदला ले रही है, इसलिए आज यह अति आवश्यक हो गया है कि हम प्रकृति के सान्निध्य में वापस लौटें।

(20) "आज के बदलते परिवेश में संवेदनशील भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं" प्रस्तुत पाठ के आधार पर बताइए।

उ०- लेखक का कहना है कि आज उसका घर मुंबई के वर्सोवा शहर में है। पहले यहाँ पेड़ थे। पक्षी विचरण करते थे, अन्य जानवर भी थे। अब यहाँ समुद्र के किनारे लंबी चौड़ी बस्ती बन गई है। इस बस्ती में न जाने कितने जीव, जंतुओं के घर छीने हैं। कुछ शहर छोड़कर चले गए, कुछ ने इधर-उधर डेरा डाल दिया। इनमें से दो कबूतरों ने लेखक के घर के एक मचान पर घोंसला बना लिया। उन कबूतरों के बच्चे हैं। वह कबूतर दिन भर आते-जाते रहते हैं, क्योंकि बच्चों को खिलाने-पिलाने की जिम्मेदारी अभी भी उनकी है। वे बार-बार आने जाने के कारण कभी कोई चीज गिराकर तोड़ देते हैं, कभी मेरे पुस्तकालय की पुस्तकें छेड़ते हैं व उनमें गंदगी फैला देते हैं। लेखक की पत्नी ने इस परेशानी से तंग आकर उनके घोंसले को दूसरी जगह करके जाली लगा दिया है। उनके आने की खिड़की को भी बंद किया जाने लगा है। खिड़की के बाहर दोनों कबूतर उदास बैठे रहते हैं। अब न सोलोमेन हैं न मेरी माँ जो उनकी व्यथा का अहसास कर सकें या उनके दुख में सारी रात नमाज पढ़ सकें। इस प्रकार आज के बदलते परिवेश में संवेदनशील भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं।